18 MARCH

27 Wk 13 • 086 Day TUESDAY

March 2018

Wk	M	T	W	T	F	S	S
09				1	2	3	4
10	5	6	7	8	9	10	11
11	12	13	14	15	16	17	18
12	19	20	21	22	23	24	25
13	26	27	28	29	30	31	

अनुमान के प्रकार

अनुमान का वर्गीकरण न्याय दर्शन के द्वारा तीन रूपों में किया गया है-

1. प्रयोजन के आधार पर
2. कारणता के आधार पर
3. संबंध के आधार पर

1. प्रयोजन के आधार पर अनुमान को दो प्रकार का माना गया है-

i) स्वार्थानुमान
ii) परार्थानुमान

2. कारणता के आधार पर अनुमान तीन है

i) पूर्ववत्
ii) शेषवत्
iii) सामान्यतोदृष्ट

3. संबंध के आधार पर अनुमान तीन है,

i) केवलान्वयी
ii) केवल व्यतिरेकी और
iii) अन्वय व्यतिरेकी

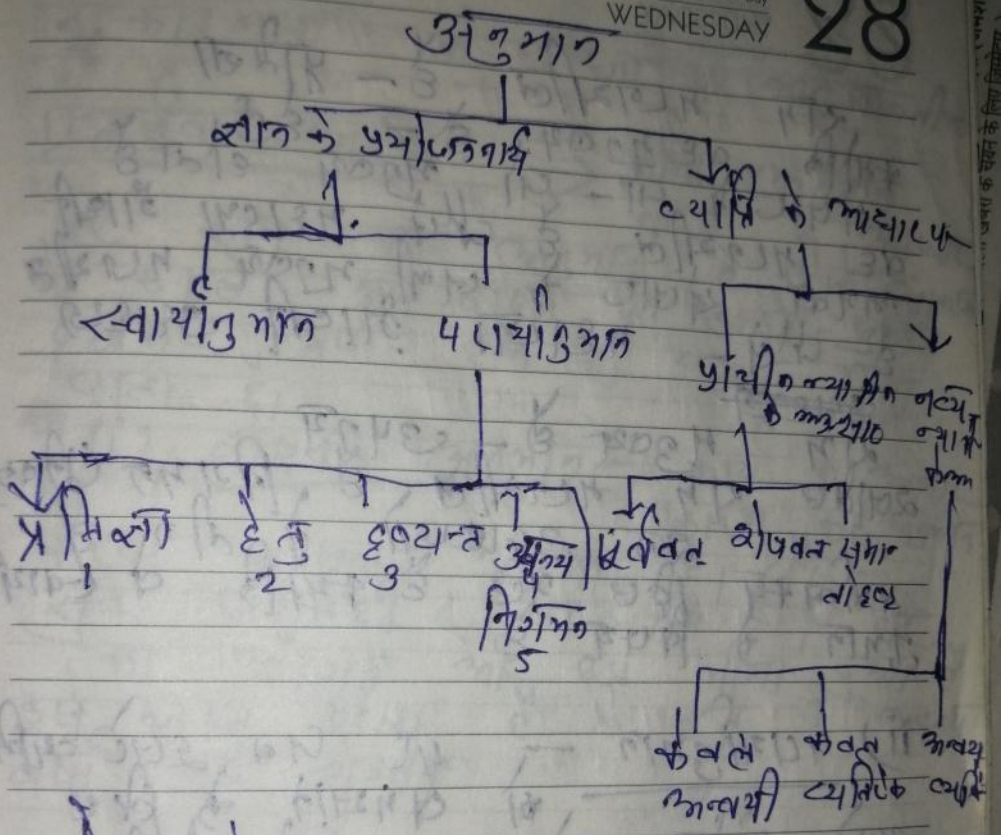

अनुमान

- ज्ञान के प्रयोजनार्थ
  - स्वार्थानुमान
  - परार्थानुमान
    - प्रतिज्ञा 1
    - हेतु 2
    - दृष्टान्त 3
    - उपनय 4
    - निगमन 5
- व्याप्ति के आधार पर
  - प्राचीन न्याय के अनुसार
    - पूर्ववत्
    - शेषवत्
    - सामान्यतोदृष्ट
  - नवीन न्याय के अनुसार
    - केवल अन्वयी
    - केवल व्यतिरेकी
    - अन्वय व्यतिरेकी

1. प्रयोजन के आधार पर अनुमान—

(i) स्वार्थानुमान → स्वार्थानुमान वह है जो स्वयं ज्ञान पाने के लिए किया जाता है। जब व्यक्ति केवल अपने हित के लिए अनुमान करता है तब वह अनुमान स्वार्थ स्वार्थानुमान होता है। जैसे- मैं जानना चाहता हूँ कि श्याम मरणशील है इसके लिए मैं निम्नलिखित रूप से अनुमान करता

'18 MARCH

29 Wk 13 • 088 Day THURSDAY

राम मरणशील है – प्रतिज्ञा
क्योंकि वह मनुष्य है – हेतु
संसार में जो-जो मनुष्य होता है
वह मरणशील है जैसे महात्मा गाँधी
अथवा संसार के सभी मनुष्य मरणशील
है जैसे – महात्मा गाँधी उदाहरण
~~उदाहरण~~
राम मनुष्य है – उपनय
इसलिए राम मरणशील है निगमन (निष्कर्ष)
इन उदाहरणों में तीन ही
तर्कवाक्य दिए गए है क्योंकि वे स्वार्थानुमान के विषय हैं

ii) परार्थानुमान – पर जब दूसरे व्यक्ति को समझाने के लिए उसके संदेह को दूर करने के लिए अनुमान किया जाता है तो उसे परार्थानुमान कहते है। इस अनुमान में पाँच तर्कवाक्यों की सहायता ली गई है, इसलिए इसे पंचावयव अनुमान भी कहते है, उपर्युक्त उदाहरण में पाँच तर्कवाक्यों को दर्शाया गया है। ये पाँचो वाक्य परार्थानुमान है

i) पंचावयव अनुमान को बौद्ध, जैन और न्याय दर्शन स्वीकारते है,

2. कारणता के आधार पर अनुमान तीन है

i) __पूर्ववत् अनुमान__ → पूर्ववत् अनुमान कारण के आधार पर कार्य का अनुमान है जैसे - आकाश में काले घने बादल को उमड़ते - घुमड़ते देखकर वर्षा होने का अनुमान किया जाता है।

ii) __शेषवत् अनुमान__ → कार्य के आधार कारण का अनुमान करना शेषवत् अनुमान है। जैसे - सुबह जगते ही देखा जाता है कि घर का आँगन और छत भीगा हुआ है इसे ज्ञात होता है कि रात में अवश्य वर्षा हुई होगी।

iii) __समान्यतोदृष्ट अनुमान__ → समान्यतोदृष्ट अनुमान वह अनुमान है जिसके द्वारा कतिपय चिन्हों या संकेतों द्वारा अदृष्ट साध्य का ज्ञान प्राप्त किया जाता है जैसे - सिंह और पूंछ कारण कार्य संबंध नहीं होता है फिर भी किसी जानवर के सिंह को देखकर हम अनुमान करते हैं कि उसके पास पूँछ भी है। हम प्रायः पाते हैं कि सींग वाले जानवर पूँछ वाला होता है।